International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-09-2020; Accepted: 05-10-2020; Published: 21-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 123-125

गबन में राष्ट्रीय आंदोलन

अंशुमाला
पी–एच डी0 शोधार्थी (हिन्दी) ल0 ना0 मि0 वि0 वि0 दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
प्रेमचंद की यह औपन्यासिक कृति 'गबन' सन् 1931 में प्रकाशित हुई। यह समय भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का वह काल था जब सम्पूर्ण देश स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु आंदोलित था। 20 मार्च 1929 को मेरठ षडयंत्र केस द्वारा पूरे देश में अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरप्तारियाँ हुई थीं। देश में उत्पन्न क्रांतिकारी चेतना को दबाने के लिए यह अंग्रेजी साम्राज्यवाद की धृष्टतापूर्ण नीति थी। प्रेमचंद जैसे सजग कलाकार का इस घटना से अछूता रहना असम्भव था। अमृतराय का यह कहना कि "उपन्यास जिस रंग में शुरू हुआ था, शायद उसी रंग में खत्म भी हो जाता। लेकिन हो नहीं सका। उन्हीं दिनों मेरठ खडयंत्र केस चल पड़ा। 'गबन' का उत्तरार्द्ध पूरे का परा क्रांतिकारियों के खिलाफ पुलिस के झूठे केस की दास्तान है। अतः इसका प्रमाण है 'गबन' की कथा का इलाहाबाद से कलकत्ते आना एक मध्यवर्गीय परिवार का राष्ट्रीय आंदोलन से संबद्धता को दर्शाता है।"

मूलशब्द: गबन, प्रेमचंद, राष्ट्रीय आंदोलन, मध्यवर्ग।

प्रस्तावना
प्रेमचंद ने "साहित्य का उद्येश्य" पुस्तक में 'उपन्यास' शीर्षक लेख से लिखा है– "लेकिन आजकल परिस्थितियाँ इतनी तीव्र गति से बदल रहीं, इतने नये–नये विचार पैदा हो रहे हैं कि कदाचित अब कोई लेखक साहित्य के आदर्श को ध्यान में रख ही नहीं सकता। यह बहुत मुश्किल है कि लेखक पर इन परिस्थितियों का असर ना पड़े।"[1]. अतः स्पष्ट है कि प्रेमचंद जैसे राष्ट्रीय चेतना से लबरेज व्यक्तित्व पर देश के इस समसामयिक घटना का प्रभाव पड़ना स्वभाविक था जिसकी स्पष्ट झलक 'गबन' उपन्यास में दिखाई पड़ता है। 'गबन' उपन्यास में प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन में एक साथ मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, महिलाएँ एवं पुलिस तथा नौकरशाही की भूमिका का बेबाक चित्रण किया है।

प्रख्यात समालोचक डा0 रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद की राष्ट्रीय भावना के संदर्भ में कहा है– "प्रेमचंद उन लेखकों में हैं जिनकी रचनाओ से बाहर के साहित्य–प्रेमी हिन्दुस्तान को पहचानते हैं। उन्होने हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय सम्मान को बढ़ाया है। हमारे देश को अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में गौरव दिया है। प्रेमचंद पर सारा हिन्दुस्तान गर्व करता है, दुनिया की शांति प्रेमी जनता गर्व करती है, सोवियत संघ के आलोचक मुक्त कंठ से उनका महत्व घोषित करते है, हम हिंदी–भाषी प्रदेश के लोग उन पर खासतौर से गर्व करते हैं क्योंकि वह सबसे पहले हमारे थे, जिन विशेषताओं को उन्होंने अपने कथा–साहित्य में झलकाया है, वे हमारी जनता की जातीय विशेषताएँ थी।"[2]. अतः प्रेमचंद के इस राष्ट्रीय जनवादी चेतना का स्पष्ट प्रभाव 'गबन' में भी देखने को मिलता है।

'गबन' में मात्र नारी की आभूषण–प्रियता की समस्या को नहीं उठाया गया है वरन् जालपा के इस आभूषण प्रेम को स्वाधीनता–संग्राम की समस्या से जोड़ दिया गया है। इसकी पुष्टि भी डा0 शर्मा के इस कथन द्वारा होता है– "निर्मला" के बाद 'गबन' हिन्दी साहित्य के यर्थाथवाद में एक आगे बढ़ा हुआ कदम है। xxxxxxx प्रेमचंद ने उसे नारी–समस्या का व्यापक चित्र बनाने के साथ–साथ इस समस्या को हिन्दी–साहित्य में पहली बार देश की स्वाधीनता की समस्या से जोड़ दिया है।"[3].

'गबन' उपन्यास का प्रतिनिधि पुरूष पात्र रमानाथ का परिचय प्रेमचंद कुछ इस प्रकार से देते हैं– "शतरंज खेलता, सैर–सपाटे करता और माँ और छोटे भाइयो पर रोब जमाता। दोस्तों की बदौलत शौक पूरा होता रहता था। किसी का चेस्टर मांग लिया और शाम को हवा खाने निकल गये। किसी का पम्पशू पहन लिया, किसी की घड़ी कलाई पर बाँध ली। कभी बनारसी फैशन में निकले कभी लखनबली फैशन में। दस मित्रों ने एक–एक कपड़ा बनवा दिया, तो दस सूट बदलने का साधन हो गया।"[4]. उक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद 'रमानाथ' जैसे पात्र द्वारा भारत के मध्यवर्गीय नवयुवकों की मनःस्थिती का आइना दिखा रहे हैं। यह भारतीय मध्यवर्गीय पात्र रमानाथ अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त किया हुआ एक ऐसा नवयुवक है जो बेरोजगार है और दोहरी मानसिकता में जी रहा है। अपनी वास्तविक स्थिति को छुपाना एवं जो वह होना चाहता है उसे पूरा करने की होड़ में वह झूठ बोलता है, बाध्यआडम्बर का चोला पहने रहता है, रिश्वत लेता है और अंततः गबन के आरोप में फॅसकर कलकत्ता भाग जाता है और वहाँ भी पुलिस के चंगुल में फॅसकर क्रांतिकारियों के खिलाफ झूठी गवाही तक देने को तैयार हो जाता है। अर्थात् एक सामान्य झूठ को छिपाने के लिए झूठ पर झूठ बोलते हुए रमानाथ जैसे लोग पतन की गर्त में समाते चले जाते हैं और देशद्रोही बनने तक को भी तैयार हो जाते हैं। इस तरह से प्रेमचंद ने रमानाथ के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की है कि अपने ऊँची महत्वाकांक्षाओ और एक दुसरे से आगे बढ़ने की होर, अपने निजी स्वार्थ, थोड़े से लोभ–लाभ एवं अपनी प्रदर्शण की प्रवृत्ति के कारण किस तरह से भारत का मध्यवर्ग अंग्रेजी शासन का साथ दे रहा था। 'गबन' का उत्तरार्थ जिसमें कलकत्ते की घटना का वर्णन हैं पूरे का पूरा अंग्रेजों का साथ दे रहे भरतीय पुलिस, हुक्मरानो, नौकरशाहों आदि का दास्तान है। देश के स्वाधीनता–संग्राम का यह वह समय था जब महात्मा गांधी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर स्कूल, कॉलेज, वकालत, सरकारी नौकरी, विदेशी वस्तुओं आदि का बहिष्कार किया जा रहा था। ऐसे समय में यह स्वकेन्द्रित मध्यवर्ग राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर बनाने में किस तरह से अपनी

भूमिका निभा रहे थे इसका सांगोपांग वर्णन 'गबन' में किया गया है।

प्रेमचंद ने मध्यवर्ग की सीमा को यही तक खत्म नही किया है। उन्होनें रमानाथ और जालपा के माध्यम से इस वर्ग में संभावनाओं की भी तलाश की है। रमानाथ का आत्मकेन्द्रित स्वार्थपरता, जालपा और निम्नवर्ग का प्रतिनिधि पात्र देवीदीन खटिक के व्यक्तित्व से बार–बार टकराता है एवं उनसे प्रेरित होकर रमानाथ में जागृति आती है। वह अपने को आडम्बरविहीन करने की सामर्थ्य पाता हैं और सच कहने तथ सच का सामना करने की हिम्मत जुटाता है। प्रेमचंद ने स्पष्ट किया है कि भारत के स्वाधीनता संग्राम की सफलता में मध्यवर्ग रीढ़ की हड्डी की भूमिका में है। अतः इसका सशक्त बनना अत्यावश्यक है।

'गबन' उपन्यास में प्रेमचंद की दृष्टि राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम पक्ष की स्वतंत्रता–प्राप्त कैसे हो इस पर नहीं है अपीतु स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद के भारत की तस्वीर कैसी हो इस पर है। अंग्रेजी शासन के बाद फिर कैसा शासन भारत में होगा? उस शासन में स्त्रियों, गरीबो, दलितों–पिछड़ों, किसान–मजदूरों, पुलिस–नौकरशाहों, अमीरों–जमींदारों की स्थिति कैसी होगी? स्वाधीन भारत में सत्ता और शक्ति में किसकी भागीदारी होनी? प्रेमचंद ने देवीदीन खटिक जैसे निम्नवर्गीय पात्र द्वारा इन प्रश्नो को उठाकर देश के भविष्य पर चिंता व्यक्त किया है। देवीदीन कहता है– "साहब सच बताओ जब तुम सुराज का नाम लेते हो, तो उसका कौन–सा रूप तुम्हारी आँखो के सामने आता है। तुम भी बड़ी–बड़ी तलब लोगे, तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलों में रहोगे, पहाड़ो की हवा खाओगे, अंग्रेजी ठाट बनाये घूमोगे, इस सुराज से देश का क्या कल्यान होगा? तुम्हारी और तुम्हारे भाई–बन्दों की जिन्दगी भले आराम और ठाट से गुजरे पर देश का तो कोई भला न होगा। बस बगलें झांकने लगे। तुम दिन में पाँच बेर खाना चाहते हो, और वह भी बढ़िया माल, गरीब किसान को एक जून सूखा चबेना भी नहीं मिलता। उसी का रक्त चूसकर तो सरकार तुम्हें हुद्दे देती है। तुम्हारा ध्यान कभी उनकी ओर जाता है? अभी तुम्हारा राज नही है, तब तो तुम भोग–विलास पर इतना मरते हो, जब तुम्हारा राज हो जायेगा, तब तो तुम गरीबों को पीसकर पी जाओगे।"[5].

प्रेमचंद यहा साक्षात भविष्यद्रष्टा दिखाई पड़ रहे हैं। देवीदीन के माध्यम से कहे गए एक–एक शब्द आज के भारत की कहानी कह रही है जबकि स्वाधीन तो हम 73 वर्ष पहले हो गये। 'गबन' के देवीदीन और जग्गो ऐसे निम्नवर्गीय दम्पती है। जिन्होने स्वाधीनता की लड़ाई में अपने दो पुत्रो का खो चुके हैं लेकिन राष्ट्र–प्रेम की भावना में कही कोई कमी नहीं आयी है। वे कम आमदनी वाले लोग अपने झोपड़े में एक भी विदेशी सामान नही रखते। वे खद्दर पहनते और नीचे सोते है और अपनी ऐसी परिवारीक स्थिति में रामनाथ जैसे लोगो को शरण भी देते है तथा रास्ता भी दिखाते हैं। जालपा के द्वारा प्रेमचंद का यह कहलवाना कि "खटिक हो या चमार हमसे तुमसे सौ गुने अच्छे है। एक परदेशी आदमी को छः महीने तक अपने घर में ठहराया, खिलाया–पिलाया हममे है इतनी हिम्मत। यहा तो मेहमान आ जाता हैं तो वह भी भारी हो जाता है।"[6]. अगर वह नीचे हैं, तो हम उनसे कही नीचे है। यहाँ प्रेमचंद ने दिखाया है कि भद्र समाज में कितना ओछापन हैं और जिसके कारण उनमें अलगाव है बल्कि यह निम्नवर्ग अपनी सोच में कितनी व्यापक्ता लिए है कि इनमें परस्पर सहयोग कि भावना है। फलस्वरूप इनमें एकता है। यही एकता राष्ट्रीय आंदोलन के सफलता की कूंजी है।

'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेमचंद ने महिला चरित्रों के माध्यम से सामाजिक प्रश्नों से जोड़ा है। 'गबन' उपन्यास में पाँच महिला पात्र है– जालपा, रतन, जोरा, जग्गो और रामेश्वरी। रामेश्वरी एक परम्परागत महिला चरित्र है। 'जालपा' जो इस उपन्यास की प्रतिनिधि पात्र है इसका चरित्र घर की चहारदीवारी से शुरू होती है एक विलासनी नायिका के रूप में। आभूषण प्रेमी यह व्यक्तित्व जब पति के घर आती है तो सर्राफ के द्वारा तकाजा किये जाने पर इसके स्व का विस्तार होता है और यह विचारशील नायिका के रूप में प्रस्तुत होती है और यही जालपा जब पति रमानाथ की खोज में कलकत्ता पहुँचती है और उस पति की प्रत्येक वास्तविक स्थिति से परिचित होती है तो वह राष्ट्र की समस्या के सम्मुख खड़ी होती है एवं उसका व्यक्तित्व विकास के चरम पर पहुँच जाता है। वह सेवा और त्याग की प्रतिमूर्त्ति नजर आती है, और आभूषण तो क्या अपने पति तक को राष्ट्रीय आंदोलन की बलिवेदी पर न्योछावर करने में जरा भी नही हिचकती। जालपा का आभूषण प्रेम, देश–प्रेम तक की यात्रा तय करती है।

प्रेमचंद ने जालपा के चरित्र का विकास कर यह दिखाया है कि जिस राष्ट्रीय आंदोलन को अखिल भारतीय आंदोलन कहा जाता है उसमें देश की आधी आबादी का जबतक योगदन नही होगा हमारी आजादी पूर्ण नही है। ये भारतीय पितृ सत्तातमक समाज की देन है जहाँ नारी मात्र चहारदीवारी के अंदर पारिवारिक जिम्मेदारी निभाहती है। उच्चवर्ग में तो इनकी स्थिति और भी विकट है। यहाँ ये केवल भोग्या के रूप में एक पदार्थ की तरह इस्तेमाल की जाती हैं। प्रेमचंद इसके सख्त विरोधी थे। और नारी की इस समस्या को उन्होनें सर्वत्र अपने कथा–साहित्य में उठाया है। नारी के सशक्तिकरण के लिए उनका राजनीति में आना आत्यावश्यक है, प्रेमचंद इस सत्य को समझ रहे थे। उन्होने जालपा के चरित्र का विस्तार इसी संदर्भ में किया हैं कि नारी केवल सज–संवर ही नही सकती वरण् आवश्यकता पड़ने पर वह पुरूषों से आगे निकलकर अपनी सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका भी निभा सकती है।

'गबन' उपन्यास 'रतन' नाम की एक महिला पात्र के माध्यम से प्रेमचंद ने उच्चवर्ग के चकाचौंध के पीछे नारी की असुरक्षित स्थिति को चित्रित किया है। प्रेमचंद ने पुरी निर्भिकता से विधवा रतन द्वारा इस पाखंडी समाज पर चोट करते हुए कहलवाया है न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था,अगर ईश्वर कही है, और उसके यहाँ कोई न्याय होता है, तो एक दीन उसी के सामने उस पापी से पूछुगीं, क्या तेरे घर में माँ बहनें न थी? तुझे उनका अपमान करते लज्जा न आई अगर मेरी जुवान में इतनी ताकत होती कि सारे देश में उसकी आवाज पहुँचती, तो मैं सब स्त्रियो से कहती–कि बहनों, किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो जब तक अपना घर अलग न कर लो, चैन की नींद मत सोना। यह मत समझो कि तुम्हारे पति के पीछे उस घर में तुम्हारा मान के साथ पालन होगा। xxxx अगर तुम्हारे पुरूष ने कुछ छोड़ा है, तो अकेली रहकर तुम उसे भोग सकती हो, परिवार में रहकर तुम्हें उससे हाथ धोना पड़ेगा। परिवार तुम्हारे लिए फूलों की सेज नहीं, काँटो की शय्या है, तुम्हारा पार लगाने वाली नौका नही, तुम्हे निगल जानेवाला जंन्तु।"[7].

प्रेमचंद ने यहाँ स्त्री की आर्थिक स्वत्रंता को स्वाधीन भारत के राजनैतिक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया है। निम्नवर्ग के देवीदीन खटिक और जग्गो का दाम्पत्य जीवन उच्चवर्ग एवं मध्यवर्ग से बेहतर है क्योकि वे दानो आत्मनिर्भर हैं। प्रेमचंद जिस समय में स्त्री के आत्मनिर्भर की होने की बात कर रहे थे वह आज भी प्रासंगिक है। हमारे भारतीय समाज की मनोदशा अभी भी पूर्णतया अपने परम्परागत ढ़ाँचे को तोड़कर निकल नहीं पाया है और यह देश की समस्या बनी हुई है।

प्रेमचंद ने 'गबन' में राष्ट्रीय आंदोलन के एक स्तम्भ पुलिस तथा नौकरशाहो की भूमिका पर भी निशाना साधा है। अपनी रचना में

उन्होनें दारोगा से लेकर वकील एवं जज तक के कारनामो का पर्दाफाश किया है। अंग्रेजी शासन में किस तरह भारत के भारतीय लोग ही अफसरो की भूमिका में अपने ही देश की जनता के शोषक बने हुए हैं गबन में इसका विस्तारपूर्वक खुलेआम चित्रण हुआ है। 'रमानाथ' जैसा भीरु युवक का गवाह बन जाना एवं डकैती जैसे झूठे आरोपो में देश के क्रांतिकारी नवयुवको कों फॉसी चढ़वाने में संलिप्त हो जाना पुलिस की कुटिल चाल, वकील का झूठा दास्तान शोषण के कुचक्र को चित्रित करने के लिए पर्याप्त हैं। देश की ऐसी स्थिति में स्वतंत्रता की कल्पना मात्र स्वतंत्र भारत के रूप में नहीं वरन् स्वतंत्रोपरान्त भारत के स्वरूप के लिए चितनीय है। इस व्यथा को प्रेमचंद ने 'गबन' में व्यक्त किया है जो आज भी प्रासंगिक है।

निष्कर्षत

'गबन' में राष्ट्रीय आंदोलन के दो प्रमुख स्वर उजागर हुए हैं– एक स्वाधीनता का और दूसरा नवजागरण का। अंग्रेजों का आधिपत्य भारत से हटाना और भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराना यह भारत की राष्ट्रीयता की भावना से संबद्व है। स्वाधीनता प्राप्त भारत कैसा हो? यह भावना नवजागरण की है। उस समय सम्पूर्ण विश्व से लकर भारत तक के बुद्धिजीवी वर्गों में यह मानस मंथन चल रहा था कि आधुनिक, वैज्ञानिक एवं तार्किक ज्ञान द्वारा अपने इतिहास, समाज, संस्कृति, धर्म एवं परम्पराओं आदि को कैसे पुनर्परिभाषित किया जाय। इस नीवन युग के नवीन भारत में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्गीय, समाज के लोगों, महिलाओं, नौकरशाहो, पुलिस महकमों, सत्ताधारियों आदि सभी की भूमिका कैसी होगी। इस सारे सवालों का जवाब रचनात्मक धरातल पर ढूँढ़ने का प्रयास प्रेमचंद ने अपने 'गबन' उपन्यास में किया है। समग्रतः 'गबन' उपन्यास में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

संदर्भ सूची

1. साहित्य का उद्येश्यः प्रेमचंदः हंस प्रकाशन इलाहाबाद, नवीन संशकरण, अक्टूबर 1983 ई0, पृष्ठ 64.
2. प्रेमचंद और उनका युगः डॉ0 रामविलास शर्मा, राज कमल प्रकाशन, चौथी आवृत्ति 2006 ई0, पहले संशकरण की भूमिका।
3. वही, पृष्ठ–69.
4. गबनः प्रेमचंदः मारूति प्रकाशण, हरिनगर मेरठ,
5. अंक :3ः पृष्ठ–7.
6. वही– अंक :26ः पृष्ठ–110.
7. वही– अंक :36ः पृष्ठ–151.
8. वही– अंक :42ः पृष्ठ–168.